अध्याय 9

अय्यूब का उत्तर (भाग 1)

अध्याय 9 और 10 की भाषा न्यायालय वाली है।[1] अय्यूब ने परमेश्वर को उसके साथ बहस करने की चुनौती देने पर विचार किया ताकि उसे पता चल सके कि उसके साथ इतना अन्यायपूर्ण ढंग से क्यों बर्ताव किया जा रहा है।

होमेर हेली ने अध्याय 9 को ''एक उपद्रवी, विस्फोटक अध्याय'' नाम दिया।[2] इस अध्याय में अय्यूब यह समझ आने पर कि वास्तव में जीवन के अर्थ के उत्तर पाने के लिए कोई भी परमेश्वर को चुनौती नहीं दे सकता बहुत निचले दर्जे तक चला गया।

''क्या मनुष्य परमेश्वर से सवाल कर सकता है?'' (9:1-12)

[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''मैं निश्चय जानता हूँ कि बात ऐसी ही है; परन्तु मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है? [3]चाहे वह उससे मुक़द्दमा लड़ना भी चाहे तौभी मनुष्य हज़ार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा। [4]वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है: उसके विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल हुआ है? [5]वह तो पर्वतों को अचानक हटा देता है और उन्हें पता भी नहीं लगता, वह क्रोध में आकर उन्हें उलट-पुलट कर देता है। [6]वह पृथ्वी को हिलाकर उसके स्थान से अलग करता है, और उसके खम्भे काँपने लगते हैं। [7]उसकी आज्ञा बिना सूर्य उदय होता ही नहीं; और वह तारों पर मुहर लगाता है; [8]वह आकाशमण्डल को अकेला ही फैलाता है, और समुद्र की ऊँची ऊँची लहरों पर चलता है; [9]वह सप्तर्षि, मृगशिरा और कचपचिया और दक्षिण के नक्षत्रों का बनानेवाला है। [10]वह तो ऐसे बड़े कर्म करता है, जिनकी थाह नहीं लगती; और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जा सकते। [11]देखो, वह मेरे सामने से होकर तो चलता है परन्तु मुझको नहीं दिखाई पड़ता; और आगे को बढ़ जाता है, परन्तु मुझे सूझ ही नहीं पड़ता है। [12]देखो, जब वह छीनने लगे, तब उसको कौन रोकेगा? कौन उससे कह सकता है कि तू यह क्या करता है?''

आयतें 1, 2. अय्यूब ने अपने प्रत्युत्तर का आरम्भ यह कहते हुए किया कि ''**मैं निश्चय जानता हूँ कि बात ऐसी ही है।**'' ''बात'' बिलदद के प्रसंग की ओर वापस ध्यान दिलाती है कि ''परमेश्वर अन्याय नहीं करता है'' (8:3)। फिर अय्यूब ने एलीपज से पहले वाला ही प्रसंग दोहराया (4:17): ''**परन्तु मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है?**''[3] संसार के महान परमेश्वर पर विचार करने पर अय्यूब को समझ में आया कि मनुष्य कितना अदना है। जॉन ई. हार्टले ने लिखा है, ''प्रश्नवाचक इस बात का संकेत देता है कि ऐसी कोई सम्भावना नहीं है कि परमेश्वर के विरुद्ध मुकद्दमा जीता जा सके। फिर भी उसका मानना कि परमेश्वर

न्याय को बिगाड़ता नहीं है, उसे असम्भव यानी परमेश्वर के विरुद्ध मुकद्दमा करने पर विचार करने के लिए उकसाता है।''[4]

आयत 3. ''चाहे वह उससे मुक़द्दमा लड़ना भी चाहे तौभी मनुष्य हज़ार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा।'' ''मुक़द्दमा'' शब्द (*rib, रिब*) का अनुवाद ''बहस'' भी हुआ है (10:2; 13:8, 19; 23:6; 40:2)। इसका इस्तेमाल ''कानूनी मुक़द्दमा'' के लिए हो सकता है।[5] रॉबर्ट एल. ऐल्बर्ट ने टिप्पणी की है, ''परमेश्वर कचहरी में सारी भूमिकाएं निभाता है, आरोप लगाने वाला, गवाह, सरकारी नाज़िर, ज्यूरी और जज।''[6] इसी समझ के कारण अय्यूब को परमेश्वर के साथ बहस करने की व्यर्थता को जानने का अवसर मिला।

आयत 4. ''वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है: उसके विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल हुआ है?'' इसका अपेक्षित उत्तर है, ''कोई नहीं!'' परमेश्वर की समझ और सामर्थ के सामने कोई ठहरा नहीं सकता।

आयतें 5-9. आल्डन ने इन आयतों को ''भजन'' का नाम दिया है।[7] उसने इसे भजन संहिता 104 वाले सृष्टि पर विस्तृत और लम्बे भजन के साथ मिलाया। परमेश्वर की सृजन करने और पालन करने वाली सामर्थ हमारे आस पास के संसार में दिखाई देती है। वह **पर्वतों को अचानक हटा देता है और उन्हें उलट पुलट कर देता है** अभिव्यक्तियां भूकम्पों की ओर संकेत देती लगती हैं। अय्यूब खगोलीय पिंडों को देख अचम्भित था। **उसकी आज्ञा बिना सूर्य उदय होता ही नहीं** सूर्य ग्रहण के लिए कहा गया हो सकता है। **सप्तर्षि, मृगशिरा और कचपचिया** ''सप्तर्षि,''[8] ''पूर्णिमा'' और नंगी आंखों से देखे जा सकने वाले छह सात तारों के झुंड को कहा गया हो सकता है।[9] अय्यूब जानता था कि परमेश्वर उन सब का बनाने वाला और सम्भालने वाला है (38:31-33 पर टिप्पणियां देखें)। ये आयतें अय्यूब के एक परमेश्वर में जिसे ''एकेश्वरवाद'' कहा जाता है, विश्वास के होने की गवाही देती हैं। उसके विश्वास को प्राचीन जगत के अधिकतर लोगों के विश्वासों से जो आकाश को कई देवी देवताओं (बहुईश्वरवाद) के काम और निवास मानते थे, अलग देखा जा सकता है।

आयत 10. अय्यूब ने कहा कि परमेश्वर **ऐसे बड़े कर्म करता है, जिनकी थाह नहीं लगती; और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जा सकते**। एलीपज ने लगभग ऐसी ही बात कही थी (5:9)।

आयतें 11, 12. अब अय्यूब प्रशंसा के गुण से उसके विवरण के लिए आगे बढ़ा जिसे वह इस अद्‌भुत परमेश्वर का नकारात्मक पहलू मानता था। उसने दृढ़ता से कहा कि परमेश्वर को जाना नहीं जा सकता और सीमा में बंधा मनुष्य उस तक पहुंच नहीं सकता। किसी के पास भी इतनी सामर्थ नहीं है, कि परमेश्वर से यह पूछे कि: **''तू यह क्या करता है?''**

परमेश्वर की सामर्थ और अनुपलब्धता (9:13-24)

13''परमेश्वर अपना क्रोध ठंडा नहीं करता। अभिमानी के सहायकों को उसके पाँव तले झुकना पड़ता है। 14फिर मैं क्या हूँ, जो उसे उत्तर दूँ, और बातें छाँट छाँटकर उस से विवाद करूँ? 15चाहे मैं निर्दोष भी होता, तौभी उसको उत्तर न दे सकता; मैं अपने मुद्दई से

गिड़गिड़ाकर ही विनती कर सकता हूँ। [16]चाहे मेरे पुकारने से वह उत्तर भी देता, तौभी मैं इस बात की प्रतीति न करता कि वह मेरी बात सुनता है। [17]वह आँधी चलाकर मुझे तोड़ डालता है, और बिना कारण मेरे चोट पर चोट लगाता है। [18]वह मुझे साँस भी लेने नहीं देता है, और मुझे कड़वाहट से भरता है। [19]जो सामर्थ्य की चर्चा हो, तो देखो, वह बलवान है: और यदि न्याय की चर्चा हो, तो वह कहेगा मुझ से कौन मुक़द्दमा लड़ेगा? [20]चाहे मैं निर्दोष ही क्यों न हूँ, परन्तु अपने ही मुँह से दोषी ठहरूँगा; खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल ठहराएगा। [21]मैं खरा तो हूँ, परन्तु अपना भेद नहीं जानता; अपने जीवन से मुझे घृणा आती है। [22]बात तो एक ही है, इस से मैं यह कहता हूँ कि परमेश्वर खरे और दुष्ट दोनों का नाश करता है। [23]जब लोग विपत्ति से अचानक मरने लगते हैं तब वह निर्दोष लोगों के जाँचे जाने पर हँसता है। [24]देश दुष्टों के हाथ में दिया गया है। वह उसके न्यायियों की आँखों को बन्द कर देता है; इसका करनेवाला वही न हो तो कौन है?''

इस अध्याय के अंतिम दो पद्य अय्यूब की ओर से व्यक्तिगत रूप में बहुत सी शिकायतें हैं। उत्तम पुरुष एकवचन ''मैं,'' ''अपने,'' ''मेरे,'' ''मेरी'' के सर्वनाम अधिकतर मिलते हैं।[10] हम जानते हैं कि अय्यूब निर्दोष था। इसके अलावा अय्यूब को भी विश्वास था कि वह उन आरोपों से निर्दोष था जो उसके मित्रों द्वारा उस के ऊपर लगाए जा रहे थे। परन्तु अपनी निर्दोषता की गवाही के लिए परमेश्वर की घोषणा के बिना उन्हें संतुष्ट करने का उसके पास कोई प्रमाण नहीं था। उसे लगा कि परमेश्वर उसका अभियोक्ता है। अपने विरुद्ध कानून में उसके पास कोई उपाय नहीं था।

आयत 13. ''परमेश्वर अपना क्रोध ठंडा नहीं करता।'' अय्यूब को परमेश्वर से अलगाव का भारी बोझ लग रहा था। यह उस अलगाव के जैसा हो सकता है जो क्रूस पर संसार के पापों को सहते हुए यीशु को लगा था। वह पुकार उठा था, '''एली, एली, लमा शबक्तनी?' अर्थात् 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?''' (मत्ती 27:46)।

''अभिमानी के सहायकों को उसके पाँव तले झुकना पड़ता है।'' ''रहब'' पुराने नियम में पांच अतिरिक्त स्थानों में मिलता है ([NASB में रहब] हिन्दी की बाइबल में नीचे टिप्पणी में दिया गया है - अनुवादक) (26:12; भजन संहिता 87:4; 89:10; यशायाह 30:7; 51:9)। यह परमेश्वर द्वारा समुद्र की अपनी सृष्टि में रोके गए मिथ्या (समुद्री?) राक्षस के लिए छंदबद्ध लागू किया जाता है (3:8; 7:12 पर टिप्पणियां देखें)। भजन संहिता 87:4 और यशायाह 30:7 में यह मिस्र का रूपकात्मक नाम है। एच. एच. रोअले ने समझाया है, ''जिस प्रकार मिल्टन के पारम्परिक मिथोलजी के संकेतों का अर्थ यह नहीं है कि वह उसे मानता भी था, वैसे ही प्राचीन मिथोलजी के संकेतों का अर्थ यह नहीं है कि पवित्र लेखकों द्वारा उन्हें स्वीकृत कर लिया गयाा।''[11]

आयतें 14-16. अय्यूब ने यह मान लिया कि वह सर्वशक्तिमान के साथ झगड़ा नहीं कर सकता। उसका अभियोक्ता और उसका न्यायी दोनों परमेश्वर ही था। यदि वह यहोवा को पुकारता भी तो उसे विश्वास नहीं होना था कि वह उत्तर दे देगा। यह पुस्तक द्वारा अय्यूब के मन में आए अलगाव की सबसे निचली बात थी।

आयतें 17, 18. अय्यूब को यहां तक परखा जा रहा था, कि वह ऐसे परमेश्वर में जो धर्मी

और अच्छा है अपने विश्वास के आधार पर ही सवाल उठाने लगा।[12] उसने परमेश्वर को अपनी **कड़वाहट** का कारण माना।

आयतें 19, 20. इन आयतों का आरम्भ शर्त वाले भागों के साथ होता है, जिनमें परमेश्वर की सामर्थ की बात की गई है।[13] अय्यूब चाहे **खरा** था पर फिर भी उसे लगा कि वह सर्वशक्तिमान का सामना करने में पूरी तरह से असहाय है।

आयतें 21-24. इन आयतों में पुस्तक में किसी भी अन्य जगह से बढ़कर अय्यूब के क्रोध और कड़वाहट का पता चलता है। वह अपने दोषरहित होने को बरकरार रखना चाह रहा था, इसके लिए चाहे उसको अपनी जान देनी पड़े। उसने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर **खरे**[14] **और दुष्ट दोनों का नाश करता है**। उसका आकलन बिलदद के दावे से बिल्कुल उलट है कि ''परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है, और न बुराई करनेवालों को संभालता है'' (8:20)। परमेश्वर पर अपने आरोपों को अय्यूब ने यह सवाल करते हुए बंद किया, **''इसका करनेवाला वही न हो तो कौन है?''** संसार में अन्याय था और परमेश्वर केवल एक ही था तो फिर उसके दु:ख का जिम्मेदार और कौन हो सकता था?[15]

''हमारे बीच कोई मध्यस्थ नहीं है'' (9:25-35)

25''मेरे दिन हरकारे से भी अधिक वेग से चले जाते हैं; वे भागे जाते हैं और उनको कल्याण कुछ भी दिखाई नहीं देता। 26वे तेजी से सरकंडों की नावों के समान चले जाते हैं, या अहेर पर झपटते हुए उक़ाब के समान। 27जो मैं कहूँ, 'मैं विलाप करना भूल जाऊँगा, और उदासी छोड़कर अपना मन प्रफुल्लित कर लूँगा,' 28तो मैं अपने सब दु:खों से डरता हूँ, मैं तो जानता हूँ कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा। 29मैं तो दोषी ठहरूँगा; फिर व्यर्थ क्यों परिश्रम करूँ? 30चाहे मैं हिम में स्नान करूँ, और अपने हाथ खार से निर्मल करूँ, 31तौभी तू मुझे गड्ढे में डाल ही देगा, और मेरे वस्त्र भी मुझ से घृणा करेंगे। 32क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उससे वाद-विवाद कर सकूँ, और हम दोनों एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ सकें। 33हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे। 34वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे और उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए। 35तब मैं उस से निडर होकर कुछ कह सकूँगा, क्योंकि मैं अपनी दृष्टि में ऐसा नहीं हूँ।''

आयतें 25-31. परमेश्वर से अलगाव का अय्यूब का बोध इन आयतों में बड़ी स्पष्टता से दिखाया गया है। उसका जीवन समाप्त होने को था, जैसा कि भूमि पर **हरकारे**, समुद्र में **सरकण्डों की नावों**, और आकाश में **उकाब** के रूपकों से समझाया गया है। इसके अलावा अय्यूब को भविष्य में **कल्याण कुछ भी दिखाई नहीं देता** था। यदि वह **प्रफुल्लित** होने का स्वांग भी करता, तौभी उसके अत्यधिक **दु:ख** अभी भी थे और परमेश्वर ने उसे **निर्दोष न** ठहराना था। अय्यूब को यह लगता था कि परमेश्वर ने उसे **दोषी** ठहराया है इसलिए अपनी सफ़ाई देने की कोशिश करने का कोई मतलब नहीं लगा। यदि वह **स्नान** भी कर लेता तो भी परमेश्वर ने उसे फिर से दलदल के **गड्ढे** में **डाल ही** देना था। शायद अय्यूब ने आम रस्म की बात की जिसमें उसने अपने निर्दोष होने के संकेत के लिए अच्छे से अच्छे साबुनों से नहाना था

(देखें व्यवस्थाविवरण 21:6-9; भजन संहिता 26:6; यिर्मयाह 2:22; मत्ती 27:24)।[16] परन्तु उसको विश्वास था कि ऐसा करना बेकार साबित होगा; परमेश्वर उस पर और विपत्ति भेजकर उसका और अपमान करेगा। अय्यूब ने उस व्यर्थता को जताया जो उसे लगा कि परमेश्वर के सामने धर्मी होने की इच्छा करने में है। अपने बड़े कष्ट के कारण उसे सहायता की कोई आशा दिखाई नहीं दी।

आयत 32. ''क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उससे वाद-विवाद कर सकूँ।'' परमेश्वर को अय्यूब ने ''बिल्कुल दूसरे'' व्यक्ति के रूप में देखा। वह सचमुच में श्रेष्ठ और असीम है। अय्यूब ने समझ लिया कि परमेश्वर पहुंच से बाहर है। इस बात से उसके अलगाव का बोध और बढ़ गया।

आयत 33. अय्यूब चाहता था कि उसके और परमेश्वर के बीच खड़ा होने के लिए कोई **बिचवई** हो। ''बिचवई'' (*mokiach, मोकियाक*) शब्द क्रिया *yakach* (*याकाच*) का कृदंत रूप है जिसका अर्थ है ''निर्णय करना।''[17] *मोकियाक* दो विरोधी पक्षों के बीच, निष्पक्षता से दोनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए खड़ा होने वाले को दर्शाता है। इसका अनुवाद अधिकतर संस्करणों द्वारा अलग-अलग तरीके से ''पंच'' (NJB; NJPSV), ''मध्यस्थ'' (NKJV; NLT), ''एम्पायर'' (NASB; NRSV) किया गया है। आल्डन ने लिखा है, '''रैफरी' एक ऐसी पसंद है जिसे किसी ने नहीं चुना परन्तु जो विचार को दर्शाता है क्योंकि दूसरी पंक्ति वाली तस्वीर दो लड़कों के फंसे सींग छुड़ाने की है, जो एक दूसरे को अकारथ पीट रहे हैं।''[18]

मसीही लोगों के रूप में हमारे और परमश्वेर के बीच में यीशु मसीह खड़ा है। पौलुस ने कहा, ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)। इब्रानियों के लेखक ने जोड़ा है:

> सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (इब्रानियों 4:14-16)।

आयत 34. ''वह अपना सोंटा मुझ से दूर करे।'' ''सोंटा'' चरवाहे की लाठी को कहा गया है जो तसल्ली और सुरक्षा (भजन संहिता 23:4), या दण्ड (21:9; यशायाह 10:5; नीतिवचन 22:8) दोनों का प्रतीक हो सकती थी। **''उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए।''** अध्याय 13 में अय्यूब ने लगभग ऐसी ही बात कही: ''अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर ले और अपने भय से मुझे भयभीत न कर'' (13:21)।

आयत 35. यदि दण्ड का सोंटा हटा लिया गया होता तो अय्यूब ने खुलकर **कह** सकना था, पर अफ़सोस कि उसे नहीं लगा कि ऐसी कोई सम्भावना है।

प्रासंगिकता

जो अय्यूब को मालूम था (अध्याय 9)

बिलदद ने अभी-अभी अय्यूब के साथ बात की थी और उसका मुख्य आधार यह था कि लोगों पर दु:ख इसलिए आता है, क्योंकि उन्होंने पाप किया होता है, क्योंकि परमेश्वर धर्मियों पर दु:ख नहीं आने देता। अपने मर चुके प्रिय बच्चों सहित अय्यूब पाप का दोषी अवश्य होगा, और परमेश्वर अब उन्हें केवल दण्ड दे रहा था। इस बात से अय्यूब और भी दु:खी हो गया। असल में अय्यूब इससे भी नीचे सोचने लगा था। अय्यूब बेशक बहुत परेशान था पर वह थियोलॉजी को बिलदद से कहीं अधिक जानता था।

अय्यूब जानता था कि हम सब पाप के कारण दु:ख उठाते हैं। आरम्भ में अय्यूब ने बिलदद को यह कहकर उत्तर दिया, ''मैं निश्चय जानता हूं कि बात ऐसी ही है'' (9:2)। वह जानता था कि हर कोई पाप करता है और पाप के परिणाम होते हैं। अय्यूब जानता था कि लोग वही काटेंगे जो उन्होंने बोया है और अंत में दुष्ट विनाश की ही कटनी काटेंगे।

अय्यूब का मानना था कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं कर लेता है (9:22; देखें रोमियों 2:11; KJV) और यह कि धर्मी और अधर्मी दोनों के ऊपर बारिश भेजता है (देखें मत्ती 5:45)। परन्तु अय्यूब के सामने वास्तव में इन वास्तविक्ताओं को न मानना नहीं था। चाहे उसके मित्रों को उस पर विश्वास नहीं था, पर अय्यूब को पता था कि उसने ऐसा कोई पाप नहीं किया जिससे उस पर इतनी बड़ी विपत्ति आए (9:21)। इसलिए अय्यूब को अभी भी समझ में नहीं आ रहा था कि ''मुझ पर दु:ख क्यों पड़ा है?'' उसे मालूम था कि एलीपज और बिलदद ने उसके प्रश्न के पूरे उत्तर उसे नहीं दिए थे। अय्यूब को यह समझ में नहीं आ रहा था, क्योंकि उसे कुछ राहत चाहिए थी और उसे यह पता नहीं था कि वह राहत कैसे या कब मिलेगी। अय्यूब को इसलिए भी समझ में नहीं आ रहा था क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहता है। अय्यूब संघर्षरत आदमी था पर फिर भी। ...

अय्यूब को मालूम था कि बिना मध्यस्थ के पापी व्यक्ति पवित्र परमेश्वर के सामने खड़ा नहीं हो सकता। ऐसा लगता है कि अय्यूब अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने के लिए पासा परमेश्वर की ओर फेंकना चाहता था। परन्तु अय्यूब को मालूम था कि पापी मनुष्य बिना मध्यस्थता के परमेश्वर के सामने खड़ा नहीं हो सकता। अय्यूब जानता था कि किसी को भी यह मांग करने का अधिकार नहीं है कि परमेश्वर उसके प्रश्नों का उत्तर दे। अय्यूब जानता था कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और वह जो चाहे कर सकता है। अय्यूब ने कहा कि किसी को भी परमेश्वर से यह पूछने का अधिकार नहीं है कि ''तू यह क्या करता है?'' (9:12)। परन्तु यही बात असल में अय्यूब जानना चाहता था। फिर भी अय्यूब जानता था कि परमेश्वर को परीक्षा में डालना गलत होगा। इसी लिए जब हम अध्याय का अगला हिस्सा पढ़ते हैं (9:13-35), तो हमें समझ में आता है कि अय्यूब हताश व्यक्ति था। वह जानता था कि उसके उत्तर ढूंढ़ने और उसका मुकद्दमा लड़ने में उसकी सहायता के लिए किसी मध्यस्थ या किसी पंच का होना आवश्यक है। अय्यूब को परमेश्वर की कचहरी में, जैसा कि वह था, चलना और परमेश्वर से अपने प्रश्नों के उत्तर मांगना अच्छा लगा होगा।

अय्यूब जानता था कि परमेश्वर कितना महान है। अय्यूब का अपने परमेश्वर की सामर्थ के विवरण को पढ़ना विश्वास को बढ़ाने वाला है। अय्यूब जानता था कि परमेश्वर की समझ बहुत बड़ी है और वह ''अति सामर्थी'' है (9:4)। अय्यूब जानता था कि उसका परमेश्वर पहाड़ों को हिला सकता है और किसी को पता भी नहीं चलता कि यह कैसे हुआ? (9:5)। अय्यूब जानता था कि परमेश्वर पृथ्वी को हिलाकर ''उसके स्थान से अलग'' कर सकता है (9:6) और यह कि यदि वह आज्ञा दे कि ''सूर्य उदय'' न हो, तो वह उदय नहीं होगा (9:7)। अय्यूब जानता था कि उसके परमेश्वर ने आकाशमण्डल और समुद्र को बनाया है (9:8)। अय्यूब यह भी जानता था कि उसने तारों को बनाया और उन्हें नाम भी दिए (9:9)।

किसी जवान के जनाजे में जो ऐक्सिडेंट में मारा गया था, प्रचारक अय्यूब 9:9 के इस वचन का इस्तेमाल करते हुए शोक में डूबे परिवार को तसल्ली देने की कोशिश कर रहा था। उसने तारों भरी रात में दूरबीन से तारों को देखने की बात की। फिर उसने हम सब को याद दिलाया कि वह वही परमेश्वर जिसने उन तारों को बनाया और उनके नाम रखे, आज भी हमारा परमेश्वर है। यह याद रखना शांति देने वाला है।

अय्यूब जानता था कि उसका परमेश्वर अद्‌भुत परमेश्वर है। अय्यूब यह भी जानता था कि उसने ''बड़े'' और ''आश्चर्यकर्म'' किए थे (9:10)। अय्यूब जानता था कि परमेश्वर के बारे में इतना कुछ है कि जो उसे कभी समझ में नहीं आ सकता। इसलिए अय्यूब जानता था के यदि उस दिन उसे परमेश्वर की अदालत में भेज दिया जाता तो उसने परमेश्वर के प्रश्नों के उत्तर सही-सही नहीं दे पाने थे (9:14)। अय्यूब को मालूम था कि यदि उस दिन उसे परमेश्वर की अदालत में भेजा जाता तो उसे परमेश्वर की करुणा की भीख मांगनी पड़नी थी (9:15)। अय्यूब ने कहा, ''जो सामर्थ्य की चर्चा हो, तो देखो, वह बलवान है: और यदि न्याय की चर्चा हो, तो वह कहेगा मुझ से कौन मुक़द्दमा लड़ेगा?'' (9:19)। आयत 16 से यह स्पष्ट है कि अय्यूब को यह विश्वास नहीं था कि कभी उसकी सुनवाई होगी, पर उसे इतना पता था कि उसका परमेश्वर महान है।

अय्यूब को यह भी पता था कि वह कोई बहाना नहीं बना सकता। बौद्धिक रूप में अय्यूब को पता था कि उसे जीवन परमेश्वर ने ही दिया था। अय्यूब ने पहले ही कहा था, ''यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने ले लिया; यहोवा का नाम धन्य है'' (1:21)। परन्तु यहां पर अय्यूब ने कहा, ''अपने जीवन से मुझे घृणा आती है'' (9:21)। कितनी अफ़सोसजनक बात है! अगले अध्याय में उसने कहा, ''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है'' (10:1)। निजी तौर पर मैं जीवन में अच्छाई देखना चाहता हूं परन्तु अय्यूब जैसी हालत होने पर मेरे लिए यह कठिन हो जाएगा। अय्यूब ऐसी स्थिति में था कि जो कुछ उसके साथ हो रहा था उसे उसमें कुछ भी भलाई नज़र नहीं आ रही थी (9:25)।

अय्यूब को अपनी सारी परेशानियों को भुलाकर यह स्वांग करना अच्छा लगता कि ऐसा कुछ नहीं है। परन्तु वह जानता था कि अपनी समस्याओं से मुंह मोड़ने से कुछ बदल नहीं जाएगा (9:27)।

सारांश। अय्यूब अपने बीच में एक मध्यस्थ को चाह रहा था ताकि वह अपने पवित्र, शक्तिमान और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के सामने अपने प्रश्न रख सके। मसीही लोगों के रूप में हम जानते हैं कि हमें इस बात में तसल्ली मिलेगी कि ''परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और

मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)। हम धन्यवादी हो सकते हैं कि हम क्रूस के इस पार रहते हैं और यीशु मसीह हमारा मध्यस्थ है! एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 165. [2]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 91. [3]हार्टले, 166. [4]वहीं। [5]हेली, 91. [6]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 124. [7]वहीं, 125. [8]उत्तरी तारे के गिर्द एकत्र तारों के समूह को सप्तर्षि भी कहा जाता है। [9]कचपचिया वृष (राशि) तारामण्डल का हिस्सा हैं। [10]उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम प्रत्येक पद्य में पच्चीस बार मिलता है (9:13–24, 25–35)।

[11]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 93. [12]हार्टले, 176. [13]सशर्त वाक्यखण्डों का परिचय इब्रानी कृदंत *'im* (*ईम*) के द्वारा दिया गया है। [14]आयत 21 में ''खरा'' वही इब्रानी शब्द *tham* (*थाम*) है जिसका अनुवाद 1:1, 8 में ''खरा और सीधा'' और 8:20 में ''खरा'' हुआ है। [15]हार्टले, 178. [16]वहीं, 180–81. [17]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. ऐंड सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:410. [18]आल्डन, 133.